शमशेर बहादुर सिंह

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» कवि शमशेर बहादुर सिंह का सामान्य परिचय

प्रश्न 1 (आसान). शमशेर बहादुर सिंह जी को किन सम्मानों से नवाजा गया था?
उत्तर – उन्हें 'साहित्य अकादेमी' और 'कबीर सम्मान' जैसे पुरस्कार मिले थे।

प्रश्न 2 (आसान). उनका निधन किस वर्ष और किस शहर में हुआ था?
उत्तर – उनका निधन सन् 1993 में अहमदाबाद में हुआ था।

प्रश्न 3 (मध्यम). शमशेर बहादुर सिंह जी का जन्म किस तारीख को हुआ था?
उत्तर – उनका जन्म 13 जनवरी, सन् 1911 को हुआ था।

प्रश्न 4 (कठिन). उनकी दो प्रमुख काव्य संग्रहों के नाम लिखो जो 'कुछ कविताएँ' से अलग हों।
उत्तर – 'चुका भी हूँ नहीं मैं' और 'इतने पास अपने'।

» शमशेर सिंह की काव्यगत विशेषताएँ: उर्दू और हिंदी का दोआब

प्रश्न 5 (आसान). शमशेर बहादुर सिंह को 'उर्दू और हिंदी का दोआब' कहने का क्या अर्थ है?
उत्तर – इसका अर्थ है कि उनकी कविताओं में हिंदी और उर्दू दोनों भाषाओं की सुंदरता और अंदाज़ एक साथ मिलते हैं।

प्रश्न 6 (आसान). उनकी कविताओं में किन तीन कलाओं का संगम दिखता है?
उत्तर – उनकी कविताओं में साहित्य, चित्रकला और संगीत का संगम दिखता है।

प्रश्न 7 (मध्यम). शमशेर की कविताओं में 'मूर्तता और अमूर्तता' का संगम कैसे होता है? एक उदाहरण दें।
उत्तर – उनकी कविताओं में मूर्तता यानी ठोस, दिखने वाली चीज़ों का वर्णन होता है, जैसे 'सुबह का नीला आकाश', और अमूर्तता यानी भाव या विचार, जैसे 'शांति' या 'उदासी'। वे इन दोनों को ऐसे मिलाते हैं कि एक ही दृश्य में भावना भी समा जाती है। उदाहरण के लिए, वे सूर्योदय को इस तरह चित्रित करते हैं कि वह सिर्फ एक दृश्य नहीं रहता, बल्कि एक गहरी भावना बन जाता है।

प्रश्न 8 (कठिन). शमशेर बहादुर सिंह की काव्यगत विशेषताओं के संदर्भ में 'ऐंद्रिय और ऐंद्रियेतर' के संधिस्थल को समझाइए।
उत्तर – उनकी कविताएँ हमारी इंद्रियों (आँख, कान, नाक आदि) से जुड़े अनुभवों (ऐंद्रिय) जैसे रंगों, ध्वनियों, या दृश्यों को दर्शाती हैं, और साथ ही उन विचारों या कल्पनाओं (ऐंद्रियेतर) को भी प्रस्तुत करती हैं जो इंद्रियों से परे होते हैं। जैसे, वे किसी फूल के रंग और खुशबू (ऐंद्रिय) का वर्णन करते हुए, उसके सौंदर्य के पीछे छिपी जीवन की नश्वरता के विचार (ऐंद्रियेतर) को भी जगा देते हैं, जिससे पाठक को एक संपूर्ण अनुभव मिलता है।

» शमशेर सिंह की बिंबधर्मिता और शिल्पगत प्रयोग

प्रश्न 9 (आसान). शमशेर जी को 'बिंबधर्मी कवि' क्यों कहा जाता है?
उत्तर – क्योंकि उनके शब्द पढ़ते ही मन में चित्र, रंग, आवाज़ और एहसास पैदा करते हैं, जैसे कोई कलाकार अपनी कलाकृति बना रहा हो।

प्रश्न 10 (आसान). उनकी कविताओं में कौन-कौन सी कलाओं का संगम दिखता है?
उत्तर – उनकी कविताओं में साहित्य, चित्रकला और संगीत का संगम दिखता है।

प्रश्न 11 (मध्यम). पंक्ति 'ओ माध्यम! क्षमा करना कि मैं तुम्हारे पार जाना चाहता हूँ' का क्या अर्थ है?
उत्तर – इसका अर्थ है कि कवि शब्दों के माध्यम से भी आगे बढ़कर उस मूल भावना या अनुभव तक पहुँचना चाहते हैं, जहाँ शब्दों की सीमाएँ टूट जाती हैं।

प्रश्न 12 (कठिन). शमशेर बहादुर सिंह के 'शिल्पगत प्रयोग' किस प्रकार 'प्रयोगवादी' कविता की विशेषताओं से जुड़ते हैं?
उत्तर – शमशेर जी का संज्ञा और विशेषण के बजाय सर्वनाम, क्रिया, अव्यय और मुहावरों पर बल देना, नए बिंब, प्रतीक और उपमानों का प्रयोग, तथा पुराने उपमानों में नए अर्थ भरना - ये सभी प्रयोगवादी कविता की शिल्प संबंधी विशेषताओं से जुड़ते हैं, जो कविता में नवीनता लाते हैं।

» भाषा पर शमशेर सिंह का विशिष्ट प्रयोग

प्रश्न 13 (आसान). शमशेर बहादुर सिंह की कविता में किन शब्दों पर अधिक बल दिया गया है – संज्ञा और विशेषण पर या सर्वनाम, क्रिया और मुहावरों पर?
उत्तर – सर्वनाम, क्रिया और मुहावरों पर।

प्रश्न 14 (आसान). शमशेर जी की भाषा पर किस शायरी का गहरा प्रभाव दिखता है?
उत्तर – उर्दू शायरी का।

प्रश्न 15 (मध्यम). शमशेर जी ने अपनी कविताओं में संज्ञा और विशेषण के बजाय सर्वनाम, क्रिया, अव्यय और मुहावरों को क्यों प्राथमिकता दी?
उत्तर – उन्होंने अपनी कविता को सिर्फ़ जानकारी देने वाला नहीं, बल्कि भावनात्मक और चित्रात्मक बनाने के लिए ऐसा किया। इससे कविता में गति, गहराई और एक नया मिज़ाज आता है, जो सीधे-सीधे संज्ञाओं के प्रयोग से नहीं आता। यह पाठक को अनुभव से जोड़ता है।

प्रश्न 16 (कठिन). आपकी नज़र में 'भाषा पर शमशेर सिंह का विशिष्ट प्रयोग' उनकी कविता को 'बिंबधर्मी' कैसे बनाता है? एक उदाहरण देकर समझाइए।
उत्तर – शमशेर जी का भाषा पर विशिष्ट प्रयोग उनकी कविता को बिंबधर्मी बनाता है क्योंकि वे शब्दों को केवल अर्थ के रूप में नहीं, बल्कि 'रंग, रेखा, स्वर' के रूप में इस्तेमाल करते हैं। जैसे, 'प्रातः नभ था बहुत नीला शंख जैसे' में वे केवल 'नीले आकाश' का वर्णन नहीं करते, बल्कि 'शंख' जैसा पवित्र और 'नीला' रंग देकर एक पूरा चित्र हमारे सामने खड़ा कर देते हैं। यहाँ संज्ञा (शंख) के साथ विशेषण (नीला) और अव्यय (जैसे) का प्रयोग मिलकर एक दृश्य बिंब बनाता है, जिसे हम देख और महसूस कर सकते हैं। यह 'संज्ञा' को सीधे बताने की बजाय उसे एक कल्पना और अनुभव में बदल देता है, जिससे पाठक के मन में सीधा चित्र उतरता है।

» 'प्रयोगवादी' कविता की सामान्य प्रवृत्तियाँ

प्रश्न 17 (आसान). प्रयोगवादी कविता का प्रारंभ किस वर्ष से माना जाता है?
उत्तर – 1943 से।

प्रश्न 18 (आसान). प्रयोगवादी कविता की एक मुख्य विशेषता क्या थी?
उत्तर – नए बिंब, प्रतीक और उपमानों का प्रयोग।

प्रश्न 19 (मध्यम). प्रयोगवादी कवियों ने पुराने उपमानों के साथ क्या किया?
उत्तर – उन्होंने पुराने उपमानों में नए अर्थ और चमक भरने का प्रयास किया।

प्रश्न 20 (कठिन). शमशेर बहादुर सिंह को 'बिंबधर्मी कवि' क्यों कहा जाता है और यह प्रयोगवादी कविता की किस विशेषता से मिलता-जुलता है?
उत्तर – शमशेर जी अपनी कविताओं में शब्दों के ज़रिए चित्र उकेरते थे, जिससे वे 'बिंबधर्मी कवि' कहलाए। यह विशेषता प्रयोगवादी कविता के 'नए बिंबों के प्रयोग' से मिलती-जुलती है, जहाँ कवियों ने अपनी बात कहने के लिए नए और अनूठे बिंब गढ़े।

» शमशेर सिंह की 'उषा' कविता का परिचय और केंद्रीय भाव

प्रश्न 21 (आसान). 'उषा' कविता में कवि ने किस समय का चित्रण किया है?
उत्तर – सूर्योदय से ठीक पहले के समय का।

प्रश्न 22 (आसान). कवि शमशेर बहादुर सिंह को 'बिंबधर्मी कवि' क्यों कहा जाता है?
उत्तर – क्योंकि वे शब्दों से ऐसे चित्र बनाते हैं जो आँखों के सामने सजीव हो उठते हैं।

प्रश्न 23 (मध्यम). कविता में 'राख से लीपा हुआ चौका' किस भाव को प्रकट करता है?
उत्तर – सुबह की नमी, ताज़गी और पवित्रता के भाव को प्रकट करता है, जो ग्रामीण परिवेश से जुड़ा है।

प्रश्न 24 (कठिन). 'उषा' कविता में भोर के आसमान की गति को धरती के जीवन भरे हलचल से जोड़ने का क्या अर्थ है?
उत्तर – इसका अर्थ है कि कवि केवल आसमान की सुंदरता का वर्णन नहीं कर रहा, बल्कि उसे गाँव के लोगों की रोज़मर्रा की गतिविधियों जैसे चूल्हा जलाना, चौका लीपना, बच्चों का स्लेट पर लिखना आदि से जोड़कर एक जीवंत और गतिशील चित्र प्रस्तुत कर रहा है। आसमान का बदलाव धरती के जीवन के साथ-साथ हो रहा है।

» 'उषा' कविता: भोर के बिंब और उपमान

प्रश्न 25 (आसान). कविता में 'राख से लीपा हुआ चौका' किस समय के लिए कहा गया है?
उत्तर – सुबह के समय के लिए, जब चौका अभी-अभी लीपा गया हो और उसमें नमी हो।

प्रश्न 26 (आसान). 'काली सिल' किस चीज़ का प्रतीक है?
उत्तर – यह सुबह के हल्के अंधेरे वाले आसमान का प्रतीक है।

प्रश्न 27 (मध्यम). कवि ने 'नील जल में या किसी की गौर झिलमिल देह जैसे हिल रही हो' कहकर सुबह के दृश्य को कैसे जीवंत किया है?
उत्तर – इससे कवि ने सुबह के समय सूर्य के उगने से जो चमक और गति आती है, उसे एक सुंदर युवती के पानी में नहाने और हिलते हुए शरीर की चमक से तुलना करके दृश्य को गतिशील और आकर्षक बनाया है।

प्रश्न 28 (कठिन). 'उषा' कविता में ग्रामीण परिवेश के कौन-कौन से बिंब दिखाई देते हैं? उनका महत्व समझाइए।
उत्तर – कविता में 'राख से लीपा हुआ चौका', 'काली सिल पर केसर', 'स्लेट पर लाल खड़िया चाक' जैसे ग्रामीण बिंब हैं। इनका महत्व यह है कि ये गाँव की सुबह को जीवंत, परिचित और वास्तविक बनाते हैं। ये बिंब न सिर्फ सुबह के बदलते रंगों को दिखाते हैं, बल्कि ग्रामीण जीवन की सादगी, पवित्रता और दैनिक क्रियाकलापों को भी कविता में शामिल करते हैं, जिससे पाठक कविता से गहराई से जुड़ पाता है।

» 'उषा' कविता में 'जादू टूटना' और सूर्योदय का महत्व

प्रश्न 29 (आसान). कविता में 'जादू टूटना' किस समय की ओर इशारा करता है?
उत्तर – सूर्योदय के समय की ओर।

प्रश्न 30 (आसान). जब 'जादू टूटता' है, तो क्या समाप्त हो जाता है?
उत्तर – भोर का अद्भुत और मनमोहक सौंदर्य।

प्रश्न 31 (मध्यम). 'जादू टूटना' और 'सूर्योदय हो रहा है' इन दोनों पंक्तियों का आपस में क्या संबंध है?
उत्तर – 'सूर्योदय हो रहा है' ही 'जादू टूटने' का कारण है; सूर्योदय के कारण ही भोर का सौंदर्य समाप्त होता है।

प्रश्न 32 (कठिन). शमशेर बहादुर सिंह ने 'जादू टूटना' कहकर भोर के सौंदर्य की किस विशेषता को उजागर किया है?
उत्तर – कवि ने भोर के सौंदर्य की क्षणभंगुरता (कुछ पल का होना) और उसके कल्पनात्मक या रहस्यमयी स्वभाव को उजागर किया है, जो यथार्थ के सामने टिक नहीं पाता।

» 'उषा' कविता में कोष्ठक और विराम चिह्नों का महत्व

प्रश्न 33 (आसान). 'उषा' कविता में 'नीला शंख' के बाद कोई विराम चिह्न न होने से क्या प्रभाव पड़ता है?
उत्तर – पढ़ने में गति आती है, लगता है जैसे सब कुछ एक साथ हो रहा है, दृश्य लगातार बदल रहा है।

प्रश्न 34 (आसान). अगर 'अभी गीला पड़ा है' कोष्ठक में न होता, तो कविता के अर्थ पर क्या फर्क पड़ता?
उत्तर – तो वह एक सामान्य जानकारी लगती, उसमें वह ताज़गी और प्रत्यक्ष अनुभव का भाव नहीं आता।

प्रश्न 35 (मध्यम). कविता में अल्पविराम (comma) का प्रयोग किस तरह दृश्यों को एक-दूसरे से जोड़ता है और उन्हें अलग भी करता है?
उत्तर – अल्पविराम एक छोटे से ठहराव का काम करते हैं, जिससे पाठक एक दृश्य से दूसरे दृश्य पर आराम से जा पाता है, जैसे 'राख से लीपा हुआ चौका, अभी गीला पड़ा है' में चौका और उसके गीलेपन का संबंध दिखता है।

प्रश्न 36 (कठिन). 'उषा' कविता में 'और' शब्द के बार-बार प्रयोग और उसके बाद के विराम चिह्नों का विश्लेषण करके बताइए कि यह कैसे भोर के बदलते रंगों और दृश्यों को दिखाता है।
उत्तर – कवि 'और' का प्रयोग करके एक के बाद एक नए उपमानों को प्रस्तुत करते हैं। हर 'और' के बाद कुछ देर का ठहराव, या किसी नए उपमान का आना ये दर्शाता है कि भोर का सौंदर्य एक नहीं, अनेक रूपों में है और वह लगातार बदल रहा है। यह कविता को एक गतिमान चित्र जैसा बनाता है।

» अन्य कवियों द्वारा सूर्योदय चित्रण से तुलना

प्रश्न 37 (आसान). शमशेर बहादुर सिंह की 'उषा' कविता में सूर्योदय के लिए कौन सा उपमान प्रयोग किया गया है?
उत्तर – शमशेर जी ने 'उषा' में किसी एक उपमान का प्रयोग नहीं किया, बल्कि गतिशील चित्रों की श्रृंखला से सूर्योदय को दर्शाया है, जैसे 'राख से लीपा चौका' या 'नीले जल में किसी की गौर झिलमिल देह'।

प्रश्न 38 (आसान). अज्ञेय की 'बावरा अहेरी' कविता में 'अहेरी' शब्द का क्या अर्थ है?
उत्तर – अहेरी का अर्थ है शिकारी।

प्रश्न 39 (मध्यम). जयशंकर प्रसाद की 'बीती विभावरी जाग री' कविता में 'खग-कुल कुल-कुल-सा बोल रहा' पंक्ति से क्या परिवेश उभरता है?
उत्तर – यह पंक्ति सुबह के समय पक्षियों के चहचहाने की आवाज़ को दर्शाती है, जिससे एक शांत, प्राकृतिक और जागते हुए परिवेश का आभास होता है, जहाँ जीवन धीरे-धीरे अपनी लय पकड़ रहा है।

प्रश्न 40 (कठिन). शमशेर की 'उषा' और अज्ञेय की 'बावरा अहेरी' में से किस कविता का शब्दचयन आधुनिकता और विस्तार को दर्शाता है? उदाहरण सहित समझाइए।
उत्तर – अज्ञेय की 'बावरा अहेरी' कविता का शब्दचयन आधुनिकता और विस्तार को दर्शाता है। अज्ञेय ने केवल प्राकृतिक चीज़ें नहीं बल्कि 'तारघर की नाटी मोटी चिपटी गोल धुस्सों वाली उपयोग-सुंदरी बेपनाह काया' और 'कचरा जलानेवाली कल की उद्दंड चिमनियों' जैसे शहरी और औद्योगिक परिवेश के शब्दों का भी प्रयोग किया है, जो उनकी व्यापक दृष्टि और आधुनिकता को दिखाता है। शमशेर जी का शब्दचयन ज़्यादातर ग्रामीण और साधारण चीज़ों पर केंद्रित है।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. शमशेर बहादुर सिंह जी का जन्म स्थान कहाँ है और उनकी एक प्रसिद्ध रचना का नाम बताओ।

› जन्म स्थान की जानकारी परिचय में देखें।
› उनकी प्रकाशित रचनाओं की सूची में से कोई एक नाम चुनें।

उत्तर – शमशेर बहादुर सिंह जी का जन्म देहरादून (अब उत्तराखंड में) में हुआ था। उनकी एक प्रसिद्ध रचना 'कुछ कविताएँ' है।

उदाहरण 2. शमशेर बहादुर सिंह को 'उर्दू और हिंदी का दोआब' क्यों कहा जाता है? उनकी कविता की विशेषताओं के संदर्भ में समझाइए।

› पहले 'दोआब' शब्द का अर्थ स्पष्ट करें: दो नदियों के बीच का क्षेत्र, यहाँ हिंदी और उर्दू का संगम।

› बताएँ कि उनकी कविता में हिंदी और उर्दू दोनों भाषाओं की गहरी समझ और सुंदरता एक साथ दिखती है, वे सिर्फ शब्दों का इस्तेमाल नहीं करते बल्कि दोनों की आत्मा को मिलाते हैं।

› उदाहरण दें कि कैसे उनकी कविता में साहित्य की गहराई, चित्रकला जैसी दृश्यात्मकता और संगीत जैसी लय मिलती है।

› फिर समझाएँ कि कैसे वे मूर्त (जो दिखाई दे) और अमूर्त (जो महसूस हो) भावनाओं को एक साथ पिरोते हैं।

› अंत में, ऐंद्रिय (इंद्रियों से जुड़ा) और ऐंद्रियेतर (कल्पना या विचार) अनुभवों का समन्वय भी उनकी कविता में पाया जाता है, जो उन्हें 'दोआब' बनाता है।

उत्तर – शमशेर बहादुर सिंह को 'उर्दू और हिंदी का दोआब' इसलिए कहा जाता है क्योंकि उनकी कविता सिर्फ़ दो भाषाओं का मिश्रण नहीं, बल्कि हिंदी और उर्दू की आत्मा का सुंदर संगम है। उनकी रचनाओं में साहित्य, चित्रकला और संगीत का मधुर समन्वय होता है। वे अपनी कविताओं में मूर्त और अमूर्त अनुभूतियों के साथ-साथ ऐंद्रिय और ऐंद्रियेतर अनुभवों को भी एक साथ प्रस्तुत करते हैं, जिससे उनकी कविताएँ एक अद्वितीय और बहुआयामी रूप धारण कर लेती हैं।

उदाहरण 3. शमशेर बहादुर सिंह की कविता 'उषा' में से कोई दो पंक्तियाँ बताएँ जो उनकी बिंबधर्मिता को दर्शाती हों।

› सबसे पहले हमें 'उषा' कविता याद करनी होगी और उन पंक्तियों को खोजना होगा जो पढ़ते ही हमारे मन में कोई तस्वीर, रंग या एहसास पैदा करती हों।

› उदाहरण के लिए, पहली पंक्ति है 'प्रात नभ था बहुत नीला शंख जैसे'। यहाँ 'नीला' रंग है और 'शंख' एक आकार है, जो आसमान का बिंब बनाता है।

› दूसरी पंक्ति 'राख से लीपा हुआ चौका, अभी गीला पड़ा है'। ये सुनते ही गाँव के घर का वो सुबह-सुबह का दृश्य, वो राख का रंग और गीलापन महसूस होने लगता है।

› इन दोनों पंक्तियों में, शब्दों के ज़रिए हमारे मन में साफ़-साफ़ दृश्य और एहसास बनते हैं, यही बिंबधर्मिता है।

› अरे रुको, एक और पंक्ति याद आई – 'बहुत काली सिल ज़रा से लाल केसर से, कि जैसे धुल गई हो'। ये काली सिल पर लाल केसर का दृश्य, ये भी एक मज़बूत बिंब है, है ना?

› तो हम कोई भी दो पंक्तियाँ चुन सकते हैं जिनमें चित्र, रंग या कोई एहसास साफ़-साफ़ दिखे।

उत्तर – 1. 'प्रात नभ था बहुत नीला शंख जैसे' - यह पंक्ति सुबह के नीले आकाश और शंख के आकार का बिंब प्रस्तुत करती है।

2. 'राख से लीपा हुआ चौका (अभी गीला पड़ा है)' - यह गाँव की सुबह में चौके के लीपे जाने का, उसके गीलेपन का स्पर्श-बिंब और दृश्य-बिंब निर्मित करती है।

उदाहरण 4. शमशेर बहादुर सिंह ने 'सुबह' कविता में 'बहुत नीला शंख जैसे' प्रयोग किया है। यहाँ वे भाषा का कौन सा 'विशिष्ट प्रयोग' कर रहे हैं?

› सबसे पहले पहचानो कि 'बहुत नीला शंख' में 'शंख' एक संज्ञा है, पर उसके साथ 'नीला' विशेषण और 'जैसे' अव्यय जुड़ा है।

› शमशेर जी ने सिर्फ 'सुबह हुई' नहीं कहा, बल्कि 'बहुत नीला शंख जैसे' कहकर सुबह को एक मूर्त रूप (शंख) और एक रंग (नीला) दिया।

› यहाँ वे सीधे-सीधे संज्ञा (सुबह) का वर्णन करने की बजाय, उसकी समानता एक अलग वस्तु से दिखा रहे हैं, जिससे पाठक के मन में एक गहरा चित्र बनता है।

› यह दिखाता है कि उन्होंने संज्ञाओं को सीधे प्रयोग करने की बजाय, उनके साथ सर्वनामों (जैसे 'जैसे'), अव्ययों और तुलनाओं का प्रयोग करके उसे और प्रभावी बनाया है।

उत्तर – इस प्रयोग से शमशेर जी ने सुबह को केवल एक समय नहीं, बल्कि एक जीवंत, रहस्यमयी अनुभव बना दिया है। यह उनकी भाषा के 'विशिष्ट प्रयोग' को दर्शाता है, जहाँ उन्होंने शब्दों को सिर्फ अर्थ नहीं, बल्कि भावनाएं और चित्र दिए हैं।

उदाहरण 5. सूर्य के उगने का वर्णन करते हुए, 'प्रयोगवादी' कविता की विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए एक नया बिंब प्रस्तुत कीजिए।

› पहला कदम: हमें सूर्योदय के लिए कोई नया, अनूठा बिंब सोचना है, जो पारंपरिक न हो।

› दूसरा कदम: यह बिंब हमारे आस-पड़ोस या आम जीवन से जुड़ा हो सकता है।

› तीसरा कदम: इसमें मानवीय भावनाओं या किसी आम अनुभव को जोड़ा जा सकता है।

› उदाहरण: 'सुबह का सूरज, रसोई की खिड़की से झाँकता, मानो गरम जलेबी की पहली चाशनी हो।'

› व्याख्या: यहाँ 'गरम जलेबी की पहली चाशनी' एक नया और अनोखा बिंब है जो सूर्य की गर्माहट और सुनहरे रंग को दर्शाता है, और भारतीय रसोई के आम अनुभव से जुड़ा है।

उत्तर – सूर्य के लिए नया प्रयोगवादी बिंब: 'सूरज निकला नहीं, बस बाज़ार के हलवाई की भट्टी से लाल आग की एक धधक उठी।'

उदाहरण 6. कवि ने 'उषा' कविता में भोर के आसमान को किन-किन उपमानों से चित्रित किया है और क्यों?

› पहला उपमान: 'राख से लीपा हुआ चौका' – सुबह के नम और ताज़े वातावरण को दर्शाता है, जो अभी गीला और साफ है।

› दूसरा उपमान: 'बहुत काली सिल ज़रा से लाल केसर से कि जैसे धुल गई हो' – सूर्य की हल्की लालिमा को काली रात के ऊपर ऐसे दिखाया जैसे किसी ने काली सिल पर लाल केसर रगड़ दिया हो।

› तीसरा उपमान: 'स्लेट पर या लाल खड़िया चाक मल दी हो किसी ने' – अंधेरे आसमान में लालिमा का फैलना, बच्चों की स्लेट पर लाल चाक चलाने जैसा दिख रहा है, जो मासूमियत और नई शुरुआत का प्रतीक है।

› चौथा उपमान: 'नील जल में या किसी की गौर झिलमिल देह जैसे हिल रही हो' – नीले आकाश में सूर्य का प्रतिबिंब और उसकी सुनहरी किरणें, किसी सुंदर देह के हिलने जैसा दृश्य बनाती हैं, जिससे एक जीवंतता आती है।

उत्तर – कवि ने इन उपमानों से सूर्योदय से ठीक पहले के पल-पल बदलते रंग, नमी, स्वच्छता, और जीवंतता को चित्रित किया है, जो ग्रामीण जीवन की सुबह से जुड़े हैं।

उदाहरण 7. कवि ने 'नीला शंख' उपमान का प्रयोग किसके लिए और क्यों किया है?

› सबसे पहले पहचानो कि 'नीला शंख' उपमान किसके लिए प्रयोग हुआ है। कविता में साफ लिखा है 'प्रात नभ था बहुत नीला शंख जैसे' - तो यह सुबह के आकाश के लिए है।

› अब सोचो 'क्यों' किया है। शंख कैसा होता है? नीला और पवित्र। सुबह का आकाश भी कैसा दिखता है? गहरा नीला और शांत, बिल्कुल पवित्र।

› तो हम कहेंगे कि कवि ने सुबह के गहरे नीले और पवित्र आकाश के लिए 'नीला शंख' उपमान का प्रयोग किया है। यह सुबह की शांति और शुभता को दिखाता है।

उत्तर – कवि ने 'नीला शंख' उपमान का प्रयोग प्रातःकालीन आकाश के गहरे नीले रंग और उसकी पवित्रता को दर्शाने के लिए किया है, जो भोर की शांति और शुभता का प्रतीक है।

उदाहरण 8. कविता में 'जादू टूटता है इस उषा का अब' पंक्ति का क्या अर्थ है और यह किस घटना को दर्शाती है?

› पहले पंक्ति को समझें: 'जादू टूटता है' मतलब कोई मनमोहक या अलौकिक प्रभाव खत्म हो रहा है। 'इस उषा का' मतलब भोर का, सुबह का।

› कविता के संदर्भ को याद करें: कवि ने भोर की सुंदरता को विभिन्न उपमानों (शंख, सिल, स्लेट) से चित्रित किया है, जो एक जादुई सा माहौल बनाते हैं।

› अगली पंक्ति देखें: 'सूर्योदय हो रहा है' - यह जादू के टूटने का कारण बताती है।

› निष्कर्ष निकालें: इसका अर्थ है कि सूर्योदय होने से भोर का वो अनोखा और क्षणिक सौंदर्य, जो एक जादुई आभा लिए हुए था, अब समाप्त हो रहा है और दिन की स्पष्टता सामने आ रही है।

उत्तर – इस पंक्ति का अर्थ है कि भोर का अद्भुत और क्षणिक सौंदर्य (जो कवि ने विभिन्न उपमानों से चित्रित किया था) अब समाप्त हो रहा है। यह पंक्ति सूर्योदय की घटना को दर्शाती है, जिसके साथ ही भोर के जादुई बिंब मिट जाते हैं और दिन का यथार्थ शुरू होता है।

उदाहरण 9. 'उषा' कविता की पंक्ति 'चौका (अभी गीला पड़ा है)' में कोष्ठक का क्या महत्व है?

› पहले पंक्ति को बिना कोष्ठक के पढ़ो: 'चौका'

› अब कोष्ठक वाले अंश को जोड़कर पढ़ो: 'चौका (अभी गीला पड़ा है)'

› बिना कोष्ठक के सिर्फ 'चौका' एक जगह या काम को दर्शाता है।

› कोष्ठक में 'अभी गीला पड़ा है' जोड़ने से हमें पता चलता है कि चौका अभी-अभी लीपा गया है, यानी सुबह की ताज़गी और ठंडक का अहसास और गहरा होता है।

› यह दिखाता है कि भोर का दृश्य कितना जीवंत और वर्तमान है, जैसे आप उसे अभी अपनी आँखों से देख रहे हों।

उत्तर – कोष्ठक 'अभी गीला पड़ा है' से चौके के एकदम ताज़ा होने का अहसास मिलता है, जिससे भोर की नमी और पवित्रता का बिंब और स्पष्ट होकर पाठक के मन में उतर जाता है।

उदाहरण 10. जयशंकर प्रसाद की कविता 'बीती विभावरी जाग री' में 'उषा' के लिए प्रयुक्त उपमान और परिवेश का वर्णन कीजिए।

› सबसे पहले कविता की पंक्तियाँ पढ़ें: 'बीती विभावरी जाग री! / अंबर पनघट में डुबो रहीμ / तारा-घट उफषा नागरी।'

› अब 'उषा' के लिए इस्तेमाल हुए उपमान देखें। यहाँ 'उषा' को 'नागरी' कहा गया है, यानी एक चतुर, सुंदर नायिका।

› 'अंबर पनघट' और 'तारा-घट' से पता चलता है कि सुबह को गाँव की उस लड़की या औरत की तरह दिखाया गया है जो पनघट (कुएँ) पर घड़े डुबो रही है।

› परिवेश का मतलब है कि कैसा माहौल है। इस कविता में भोर का वर्णन एक नायिका के जागरण और उसके कार्यों के माध्यम से किया गया है, जो प्रकृति को मानवीय रूप देता है। यह एक सांस्कृतिक और मानवीय प्रेममय परिवेश दिखाता है, जहाँ प्रकृति भी मनुष्यों की तरह क्रिया करती है।

उत्तर – जयशंकर प्रसाद की कविता में 'उषा' को एक सुंदर और चतुर 'नागरी' (नायिका) का उपमान दिया गया है, जो 'अंबर' (आकाश) रूपी पनघट पर 'तारा-घट' (तारों से भरे घड़े) डुबो रही है। यह परिवेश मानवीय भावनाओं और प्राकृतिक सौंदर्य के मिश्रण से निर्मित है, जहाँ प्रकृति को सजीव और मानवीय क्रियाओं में लीन दिखाया गया है।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• शमशेर बहादुर सिंह जी के जन्म-निधन की तारीख और उनकी दो-तीन प्रमुख रचनाओं के नाम बोर्ड परीक्षा में अक्सर सीधे प्रश्न के रूप में पूछे जाते हैं, इन्हें अच्छे से याद कर लेना!

• यह प्रश्न बोर्ड परीक्षा में अक्सर 3 से 5 अंकों में पूछा जाता है, जहाँ आपको इन सभी विशेषताओं को उदाहरण सहित समझाना होगा।

• यह प्रश्न बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। 'शमशेर की बिंबधर्मिता' और 'शिल्पगत प्रयोग' पर सीधा प्रश्न आ सकता है, इसलिए इसे अच्छे से समझना और याद करना।

• यह अवधारणा बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर इस पर 'प्रयोगवादी कविता की विशेषताएँ' शीर्षक से प्रश्न पूछे जाते हैं। आपको कम से कम चार से पांच मुख्य बिंदु याद होने चाहिए।

• यह कविता बोर्ड परीक्षाओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इसमें दिए गए उपमानों और बिंबों को ध्यान से समझना और उनका भावार्थ लिखना अक्सर पूछा जाता है।

• यह कविता बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है! बिंब और उपमानों पर आधारित व्याख्या वाले प्रश्न या सौंदर्यबोध वाले प्रश्न अक्सर आते हैं। हर उपमान का अर्थ और उसके पीछे कवि का भाव ज़रूर समझना और लिखना।

• यह पंक्ति कविता का महत्वपूर्ण मोड़ है। बोर्ड परीक्षा में 'जादू टूटना' के प्रतीकात्मक अर्थ और उसके महत्त्व पर अक्सर प्रश्न पूछे जाते हैं, इसे अच्छे से समझकर जाना।

• बोर्ड परीक्षा में ऐसे प्रश्न आ सकते हैं जहाँ किसी खास पंक्ति में कोष्ठक या विराम चिह्न का महत्व पूछा जाए। हमेशा उसके अर्थ और प्रभाव को समझाकर लिखना, सिर्फ निशान का नाम नहीं।

• बोर्ड परीक्षा में इन तीनों कविताओं की तुलना करते समय 'उपमान', 'शब्दचयन' और 'परिवेश' जैसे बिंदुओं पर ध्यान केंद्रित करके विस्तार से उत्तर लिखें, केवल सार न बताएं।

एक नज़र में रिवीज़न

› शमशेर बहादुर सिंह: जन्म 1911 देहरादून, कवि, साहित्य अकादेमी सम्मान, 1993 निधन।

› शमशेर: उर्दू-हिंदी का दोआब, साहित्य, चित्रकला, संगीत, मूर्त-अमूर्त, ऐंद्रिय-ऐंद्रियेतर का संगम।

› शमशेर: बिंबधर्मी कवि, शब्दों से चित्र-रंग-ध्वनि, माध्यम से परे जाने की चाह।

› प्रयोगवादी कविता (1943): नए बिंब, प्रतीक, उपमान, आम जीवन को स्थान।

› शमशेर की 'उषा' कविता: सूर्योदय पूर्व का बिंबधर्मी, ग्रामीण जीवन से जुड़ा चित्रण।

› सुबह का आसमान: नीला शंख, राख चौका, काली सिल केसर, स्लेट लाल चाक.

› उषा का जादू टूटना = सूर्योदय से भोर सौंदर्य का समापन।

› कोष्ठक, विराम चिह्न कविता में अर्थ, भाव व लय जोड़ते हैं।

› कवियों द्वारा सूर्योदय चित्रण: प्रसाद (नायिका), अज्ञेय (शिकारी), शमशेर (ग्रामीण यथार्थ) - उपमान, शब्द, परिवेश की तुलना।